शिक्षा और राष्ट्रीय तत्व

डॉ0 (श्रीमती) नीलम कुमारी*

शिक्षा मानव समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया मानी गयी है। इसने मनुष्य को श्रेष्ठ सामाजिक–सांस्कृतिक प्राणी बनाने में सदा योगदान दिया है। गुन्नार मिर्डल ने लिखा है ''शिक्षा विकास के लिए अति महत्वपूर्ण तत्व है''। कुछ सीखना ही शिक्षा है। शिक्षा से ज्ञान अनुभव तथा कुशलता मिलती है। शिक्षा को ग्रहण करना तथा शिक्षा को प्राप्त करना प्रत्येक मानव के लिए अति आवश्यक माना गया है। शिक्षा द्वारा ज्ञान तथा विवेक का संचालन होता है। शिक्षा के महत्व को देखते हुए जेम्स एस कोलमैन ने लिखा है कि अतीत में शिक्षा व्यवस्था जहाँ रूढ़िवादिता, संस्कृति रक्षक एंव संस्कृति प्रसारक के रूप में काम आती थी, वहीं आज यह परिवर्तन पहलुओं के निर्धारक के रूप में प्रयुक्त होती है। साधारणतया शिक्षा का अभिप्राय शिक्षण संस्थानों में दी जाने वाली किताबी ज्ञान व लेखन से है। व्यापक अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय आजीवन सीखने की प्रक्रिया है। महात्मा गाँधी के शब्दों में शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की चौतरफा अभिव्यक्ति है। शिक्षा एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति को व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों स्तरों पर कार्यो को उचित रूप में करने योग्य बनाती है। किसी भी समाज में शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संरचना का मूल आधार होती है। एक तरफ शिक्षा जहाँ व्यक्ति को सामाजिक, राजनैतिक पर्यावरण एवं जटिल प्रक्रियाओं को समझने में सहायता प्रदान करती है वहीं दूसरी तरफ यह उन्हें अर्थपूर्ण सहभागिता के लिए भी प्रेरित करती है इतना ही नहीं संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिपादन स्थायित्व तथा स्थानान्तरण का प्रमुख आधार और समाज के विभिन्न वर्गो की ऊर्ध्वगतिशीलता का भी महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। इसलिए शिक्षा न केवल ज्ञान के लिए बल्कि व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक प्रगति एवं व्यक्तित्व विकास के लिए अपरिहार्य साधन भी है। शिक्षा पद प्रतिष्ठा एवं सत्ता का प्रतीक होने के साथ–साथ व्यावसायिक ज्ञान का आधार तथा सामाजिक सामंज्जस्य की सहायक भी है। शिक्षा व्यक्ति को उच्च आय वाले तथा प्रतिष्ठित व्यवसायों में जाने के लिए आधार प्रदान करती है। तथा व्यक्ति के अन्तर सामूहिक पद एवं सत्ता परिवर्तन का मूल आधार बनती है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान रूप में प्रशिक्षण प्राप्त करके समाज में विशेषज्ञों, बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगतन्त्रवादियों के कार्यो में प्रवेश कराता है और उनसे सम्बन्धित अधिकार तथा सुविधायें प्राप्त करता है। व्यक्तिगत दृष्टि से शिक्षा जहाँ पद तथा प्रतिष्ठा का प्रतीक है वहीं सामूहिक दृष्टिकोण सामाजिक संरचना नियंत्रण एवं परिवर्तन का साधन है। सामाजिक स्तर पर शिक्षा को गतिशीलता तथा आधुनिकीकरण का उपकरण और स्रोत माना गया है। जबकि व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत शिक्षा वह मौलिक अधिकार है जिसके बगैर वर्तमान तकनीकी और प्रौद्योगिकीय युग में समाज तथा राष्ट्र कोई भी सफल नहीं हो सकता। शिक्षा व्यक्ति को अपने आस–पास होने वाली घटनाओं और राजनैतिक मूल्यों और संस्थाओं को समझने में सहायता प्रदान करती है। भारत के विविधता युक्त समाज में शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो गणतांत्रिक समता तथा सामाजिक न्याय सम्बन्धी मूल्यों का प्रतिपादन तथा स्तरीकरण करती है। शिक्षा में सम्पूर्ण राष्ट्रीय तत्व समाहित है जो राष्ट्रीयता को पुष्ट करते हैं। जैसे शिक्षा से मनुष्य का बहुमुखी विकास होता है। बहुमुखी विकास के अन्तर्गत बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक व चारित्रिक गुण आते हैं। बौद्धिकता वैज्ञानिक दृष्टिकोण व खुले मस्तिष्क का प्रतीक है। सामाजिक और नैतिक गुणों में अनुशासन, सहयोग, संवदेनशीलता व सहिष्णुता आते हैं। अनुशासन सामूहिक कार्यो का आधार है, सहयोग सफल जीवन का तरीका है, संवेदनशीलता न्याय व चरित्र का प्रतीक है और सहिष्णुता लोकतंत्र के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है इस तरह के बहुमुखी विकास से ही योग्य नागरिक तैयार किये जा सकते हैं। योग्य नागरिक ही सच्चे अर्थो में राष्ट्र के विकास का आधार है। शिक्षा सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने का सबसे सबल साधन है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति ऐतिहासिक घटनाओं से परिचित होता है। आपसी फूट और देश की गुलामी से पूरी तरह परिचित होता है जिससे राष्ट्र प्रेम का अंकुर उनके मन में अंकुरित होता है। शिक्षा से ही व्यक्ति राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का पाठ सीखता है, जो सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय तत्व है। शिक्षा द्वारा ही सामाजिक नियंत्रण होता है विभिन्न सामाजिक अनुसंस्तियों अर्थात दंड एवं पुरस्कार की विधि द्वारा शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक नियमों, प्रतिमानों एवं कानूनों का पालन करवाती है जिससे सामाजिक संगठन बना रहता है। शिक्षा समाजीकरण करके नैतिक गुणों का विकास करके नवीन विचारों के सात्वीकरण द्वारा सामाजिक नियंत्रण में योगदान देती है। शिक्षा द्वारा ही समाज का विकास एवं परिवर्तन होता है। समाज का विकसित होना उसके राष्ट्र की प्रगति का द्योतक है। यह शिक्षा ही है जिसके कारण आज राष्ट्र

* प्रवक्ता–हिन्दी, बापू बालिका इन्टर कालेज, फैजाबाद

विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर विकास कर रहा है। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास व उसकी सृजनात्मक शक्ति को विकसित करता है। शिक्षा व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करती है एवं विभिन्न संस्कृतियों और रूचियों के लोगों में समझ का विकास कर उनमें व्याप्त भ्रम को दूर करती है। व्यक्ति के मानसिक विकास से संघर्ष एवं तनाव की स्थिति समाप्त होती है और सामाजिक विकास को बढ़ावा मिलता है। प्राचीन मानव काफी बर्बर एवं असभ्य था परन्तु शिक्षा के प्रभाव से वह मनुष्यता से परिपूर्ण एक सभ्य एवं सुसंस्कृत रूप में दिखायी पड़ा। शिक्षा ही मनुष्य को उसकी सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित कराती है एवं उसे संरक्षित करती है किसी राष्ट्र की पहचान उसकी सभ्यता एवं संस्कृति से ही होती है। शिक्षा द्वारा ही अच्छे नागरिकों का निर्माण होता है। हमारा भारत धर्म निरपेक्ष व कल्याणकारी राज्य की स्थापना पर आधारित है। स्वतंत्रता समानता एवं भातृत्व प्रजातंत्र की आधार शिला है। इस संदर्भ में शिक्षा व्यक्ति में स्पष्ट विचार अनुशासन, सहनशीलता, सहयोग आदि गुणों का विकास कर उसे सभ्य नागरिक बनाती है। ऐसे गुणों से युक्त व्यक्ति ही राष्ट्र का भला कर सकता है। शिक्षा ही हमारी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। यह अतीत की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्वों को स्वीकारती है, वर्तमान में उसकी महत्ता को उजागर करती है फिर उसमें अपना अनुभव जोड़कर उसे आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। इस प्रकार संस्कृति की उन्नति होती है। शिक्षा इस सिद्धान्त में विश्वास करती है कि हर पुरानी चीज पुरानी नहीं होती इसलिए संस्कृति की अच्छाइयों को स्वीकार करके उसे और अधिक अच्छाई के साथ जोड़कर आगे बढ़ाती है। किसी भी व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का विकास उसके आर्थिक विकास पर निर्भर करता है। आर्थिक समस्या मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है। आज शिक्षा अधिक व्यावसायिक हो गयी है। 'ज्ञान केवल ज्ञान के लिए' यह सिद्धान्त पर्याप्त नहीं माना जाता। अब शिक्षा व्यक्ति को व्यावसायिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण देकर अपना तथा अपने आश्रितों का भरण पोषण करने योग्य बनाती है। इस ज्ञान ने आर्थिक एवं प्रौद्योगकीय क्षेत्र में गति दी है। इसी के बल पर खेती का आधुनिकीकरण हुआ और समाज में औद्योगीकरण का विकास हुआ जो राष्ट्र की प्रगति में सहायक सिद्ध हो रहा है। भारतीय समाज विभिन्नताओं से युक्त है। यहाँ बहुत से धर्म, परम्परायें, भाषाएं जातियाँ जन–जातियाँ प्रजातियां रीति रिवाज आदि हैं। शिक्षा का आधार ज्ञान–विज्ञान है। व्यक्ति को ज्ञान के विकास के क्रम में उसमें यह भावना आती है कि वह एक भारतीय है। नागरिक के रूप में उसके दायित्व एवं कर्तव्य बनते हैं। इस प्रकार की भावनाएं ही व्यक्तियों में एकता बनाये रखती है। शिक्षा मानव को सच्चे अर्थो में मानव बनाती है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति धर्म के वास्तविक स्वरूप से परिचित होता है। जिसके फलस्वरूप अंधविश्वासों, कर्मकाण्डों, पाखण्डों के साथ–साथ साम्प्रदायिक भावना की भी समाप्ति होती है जो किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण तत्व है। शिक्षा से व्यक्ति देश में अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के ज्ञान से परिचित होता है। ज्यों–ज्यों शिक्षा का विकास हो रहा है त्यों–त्यों समाज से जातिवादिता की समाप्ति हो रही है। जातिवादिता राष्ट्र के विकास में सर्वाधिक बाधक तत्व है। शिक्षा के प्रसार से ही समाज से छुआछूत की भावना लुप्तप्राय हो गयी है जो देशवासियों में प्रेम व सौहार्द को बढ़ाने में सहायक हुई है। शिक्षा व्यक्ति को उदार बनाती है जिससे मनुष्य के अन्दर भाईचारे की भावना का विकास होता है। यही बन्धुत्व की भावना उसे वसुधैव कुटुम्बकम का पाठ पढ़ाती है जिससे किसी भी राष्ट्र का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रगाढ़ होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा में सम्पूर्ण राष्ट्रीय तत्व समाहित है। शिक्षा के अभाव में स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना भी व्यर्थ है।

सन्दर्भ सूची

1. Durkheim, Emile; 1922 : Education et Sociologie, Paris, English trans. 1956
2. Lowie, R.H; 1950 : Social Organization, following count's article on " Education" in the Ency clopaedia of Social Sciences.
3. O'Shea, M.V; 1909 : Social Development and Education Boston.
4. Prabhu, P.H. : Hindu Social Organization, Popular Prakashan Pvt. Ltd; Bombay.
5. Mckee, James B; 1974 : Sociology : The Study of Society, Holt. Rimehart and Winston, New York.
6. आरवे, ए.के.सी. 1986 : शिक्षा का समाजशास्त्र. उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।
7. नारायण, आदित्य, 1987 : शिक्षा मनोविज्ञान, भाग 1,2 उत्तर प्रदेश हिन्दी अकादमी, लखनऊ।
8. रूहेला, सत्यपाल, 1986 : शिक्षा का समाजशास्त्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ।

●